बच्चों ने बनाई किताबें

मीनू पालीवाल

बच्चों में रचनात्मक कौशल विकसित करने के दृष्टिकोण और पढ़ना सीख रहे बच्चों के लिए पाठ्य सामग्री बनाने के उद्देश्य से बच्चों से किताबें बनवाने का बीड़ा उठाया गया। हमारा मानना था कि पढ़ना सीख रहे बच्चों के लिए अन्य किताबों के मुकाबले, इस तरह की दूसरे बच्चों द्वारा बनाई किताबों को पढ़ना आसान होगा क्योंकि उनमें परिचित सन्दर्भ होगा और शब्द भी ऐसे होंगे जो बच्चे रोज़मर्रा में बोलते हैं। इस लेख के माध्यम से किताबें बनवाने के उन अनुभवों को आपके साथ साझा कर रही हूँ।

बच्चों संग किताब

किताब बनाने का काम कक्षा-3 से 5 के बच्चों के साथ अलग-अलग स्कूलों में किया गया। इसके लिए हर स्कूल में डेढ़ से दो घण्टे दिए गए। बच्चों को यह बात बहुत अजीब और आश्चर्यजनक लग रही थी कि वे भी किताब बना सकते हैं। शुरुआत में बच्चों को बरखा सीरीज़ की किताबें दिखाई गईं और उनसे कहानियाँ सुनाने को कहा। फिर उनसे कहा कि "जो कहानी आपको आती है, अब उसे लिखकर इन किताबों जैसी ही किताब बनाइए।" इसके लिए बच्चों को ए-4 साइज़ के 2 कागज़ दिए गए जिन्हें बीच से मोड़कर कुल 8 पन्नों की किताब बनानी थी। इस किताब में उन्हें हर पन्ने पर एक चित्र बनाना था और उसके नीचे कहानी की एक या दो लाइनें लिखनी थीं। अक्सर बच्चे इस कोशिश में लग जाते हैं कि चित्र अच्छे बनें इसलिए मैंने बच्चों को निर्देश दिया था कि वे एक ही बार में चित्र बनाएँ, मिटाने का काम बिलकुल भी न करें।

किताबों में विविधता

- कुछ बच्चों ने सिर्फ एक ही चित्र बनाया। जैसे किसी ने अपने पसन्दीदा कार्टून का चित्र बनाया तो किसी ने गुलदस्ता। फिर उन्होंने चित्र से सम्बन्धित कुछ वाक्य लिखे, जैसे- यह एक गुलदस्ता है। यह घरों की सुन्दरता बढ़ाता है। यह देखने में अच्छा लगता है।
- कुछ बच्चों ने एक ही चित्र बनाया लेकिन उस पर वाक्य लिखने की बजाय पूरी कहानी लिख दी। मसलन, एक बच्चे ने एक पेड़ और उस पर बैठी चिड़िया बनाई। फिर पाँच लाइनों में इस चित्र पर कहानी लिख दी – एक पेड़ पर

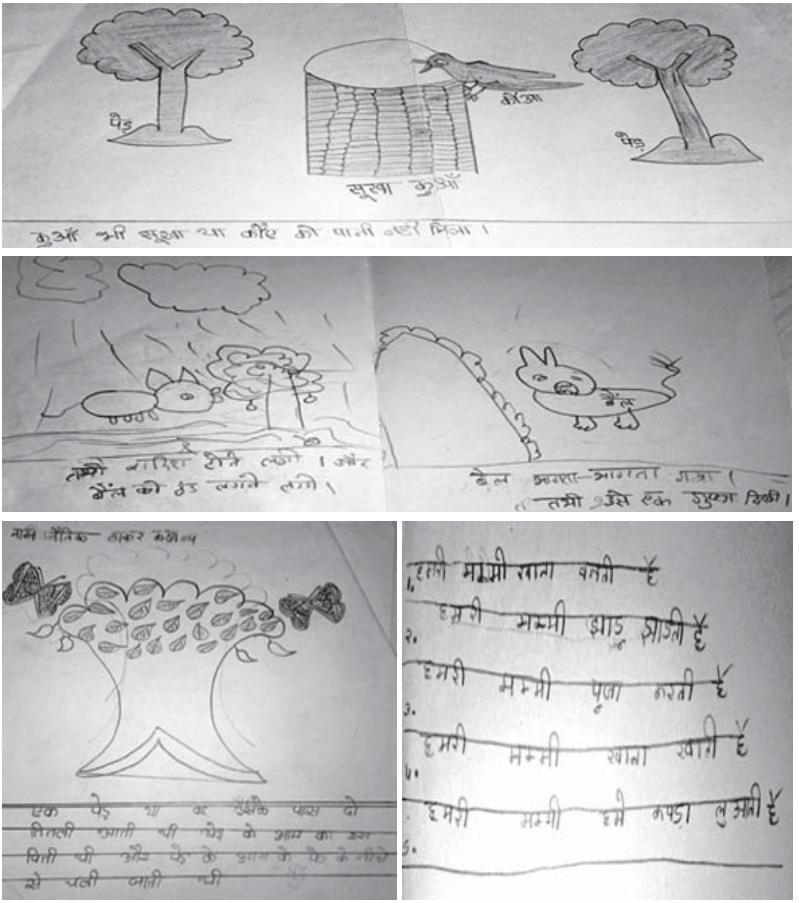

बच्चों द्वारा बनाई गई किताबों के कुछ चित्र

एक चिड़िया बैठी थी। वह आम खा रही थी। एक साँप आया। वह पेड़ की पोल में पिड़ गया। सारे आम ज़हरीले हो गए, चिड़िया मर गई।

- कुछ अन्य बच्चों ने भी कहानी बनाने की कोशिश की परन्तु उनका लेखन कहानी के रूप में नहीं आ पाया।
- कुछ बच्चों ने बरखा सीरीज़ की तर्ज पर कहानी की पूरी किताब बनाई।

कक्षा 4 के एक बच्चे ने कौए और साँप पर कहानी बनाई। आइए, इस बच्चे के काम का विश्लेषण करते हैं।

चित्र 1

चित्र 2

चित्र 3

चित्र 4

चित्र 5

चित्र 6

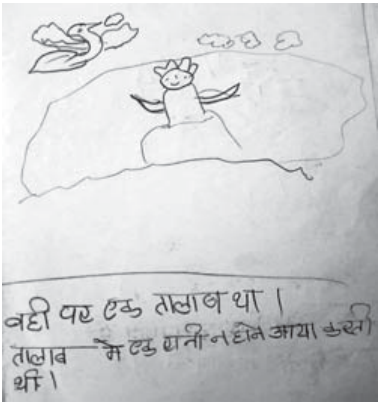

चित्र 7

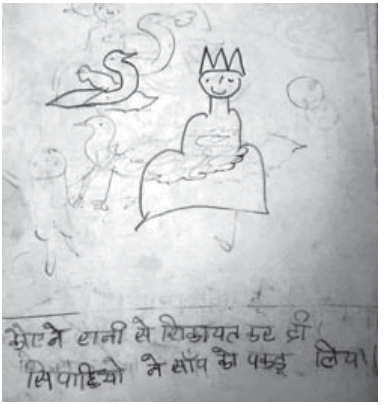

चित्र 8

इस किताब में ध्यान देने योग्य कुछ बातें:

चित्र 1 - पहले चित्र में एक कौआ आराम-से पेड़ पर अपने घोंसले में बैठा हुआ है। चित्र मिटाए बिना, एक ही बार में बनाया गया है।

चित्र 2 - दूसरे चित्र में साँप को घोंसले की ओर और कौए को घोंसले से दूर जाते हुए चित्रित किया गया है। इस चित्र के नीचे लिखा है - 'उस पेड़ के नीचे एक साँप रहता था'। इस पन्ने पर आप देख सकते हैं कि चित्र पाठक को आगे की कहानी का आभास दे रहा है। चित्र सिर्फ वही नहीं दर्शा रहा है जो नीचे लिखा है। इस चित्र में कौए पर ध्यान दीजिए, आपको एहसास होगा कि कौआ अपने घोंसले से काफी दूर उड़ रहा है। द्विआयामी चित्र में यह दर्शा पाना आसान काम नहीं है।

चित्र 3 - तीसरे चित्र को देखकर बहुत आनन्द आता है। आप देख सकते हैं कि चित्र में सिर्फ घोंसले को फोकस में रखा गया है। इस चित्र में पेड़ बनाने की ज़रूरत महसूस नहीं की गई। यह बात चौथी कक्षा का बच्चा समझ रहा है। यह चित्र बताता है कि बच्चे की अवलोकन और मानसिक चित्रण की क्षमता काफी सशक्त है। हम बच्चों के रोज़मर्रा के कामों को देखकर ही बच्चे को बेहतर रूप से समझ सकते हैं। सतत आकलन इसी वजह से महत्वपूर्ण होता है।

चित्र 7 – इस चित्र में रानी को दर्शाने के लिए उसके सिर पर मुकुट बनाया गया है।

चित्र 8 – इस पन्ने पर आप देख सकते हैं कि बहुत बार मिटाने का काम किया गया है। यदि आप कहानी से परिचित हैं तो क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि इतनी बार, और

इतना सारा मिटाने एवं बनाने का काम क्यों किया गया होगा?

आगे की कहानी संक्षेप में बता देती हूँ - कौआ रानी का हार चुरा लेता है और साँप के बिल में रख देता है। रानी अपने सिपाहियों से हार ढूँढने को कहती है। सिपाही साँप को मारकर हार वापस ले आते हैं।

किताब के सात पन्ने इस्तेमाल हो चुके थे। केवल एक ही पन्ना बाकी था और कहानी अभी बहुत सारी बची थी। मैं बहुत समय से बच्चे को मिटाने और बनाने के संघर्ष में लगे हुए देख रही थी। आपको बच्चों को संघर्ष करने का वक्त ज़रूर देना चाहिए क्योंकि बिना मेहनत के कोई क्षमता विकसित नहीं होती। शिक्षक द्वारा बच्चों को सीधे-सीधे उत्तर बता देना, बच्चे से सोचने का अवसर छीन लेता है और शिक्षण को एक अरुचिकर और क्लेरिकल काम बना देता है। इसका मतलब यह नहीं कि हमें उत्तर कभी बताना ही नहीं चाहिए। कहने का आशय सिर्फ इतना है कि बच्चों को सीधे-सीधे उत्तर बताने की बजाय शिक्षक को बच्चों को उत्तर तक ले जाने के लिए प्रश्नों और संकेतों का सहारा लेना चाहिए जिससे बच्चों को दिमागी कसरत करने का मौका मिले क्योंकि हम कोई भी पाठ सिर्फ उसमें दी गई जानकारी याद करवाने के लिए नहीं पढ़ा रहे हैं। उस पाठ के द्वारा हम बच्चों में तर्क, विश्लेषण, अवलोकन, सम्प्रेषण करना जैसी बहुत-सी क्षमताएँ विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं।

कुछ देर बाद मैंने बच्चे से पूछा कि वह किस उलझन में है। मेरा अनुमान सही था, वह कहानी के काफी बड़े हिस्से को एक ही पन्ने पर उकेरने की कोशिश में था। मैंने उससे पूछा, "क्या हम कहानी को किसी और तरह खत्म कर सकते हैं?" थोड़ा रुककर मैंने फिर कहा, "क्या रानी से साँप की शिकायत करने से काम बन सकता है?" बच्चे ने थोड़ा सोचकर कहा, "हाँ, कहानी में ऐसा कर सकते हैं।"

यह सब देखकर हम यकीनन कह सकते हैं कि किताब बनाने में बहुत-से कौशलों पर काम होता है जैसे कि

- मानसिक-चित्रण (visualization)
- कहानी को वाक्यों में पिरोना
- कहानी की बातों को तार्किक क्रम में लगाना
- रचनात्मक कौशल
- शीर्षक देना
- अपनी बात को संक्षेप में लिखना

किताबों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया

काफी बच्चों ने अपनी-अपनी तरह से किताबें बनाई थीं। बहुत-से बच्चों का लेखन कहानी के ढाँचे में था ही नहीं। कुछ बच्चे चित्र नहीं बना पाए, तो कुछ बच्चों ने सिर्फ चित्र ही बनाए। दस-बारह किताबों में से कौआ और साँप की कहानी वाली किताब सबसे बढ़िया तरीके से तैयार

हुई थी। इस बच्चे को ज़रूर किताबों और टीवी में कार्टून का अच्छा एक्सपोज़र रहा होगा तभी वह एक अच्छा प्रयास कर पाया था। मैंने यह किताब कई शिक्षकों को दिखाई। वे जल्दी-जल्दी पन्ने पलटते हुए किताब को देखते और कहते, "हाँ, अच्छी बनी है किताब।" मुझे यह किताब पहली बार पढ़ने में काफी समय लगा। ध्यान देने और खुश होने लायक उसमें कितनी सारी बातें थीं। कुछ शिक्षकों ने इस किताब को तसल्ली से देखा जो एक सुखद अनुभव था। पर सबसे पहले मैंने यह किताब उसी बच्चे के स्कूल की प्राचार्या को दिखाई। उनकी सबसे पहली टिप्पणी थी कि बच्चे ने दूसरे

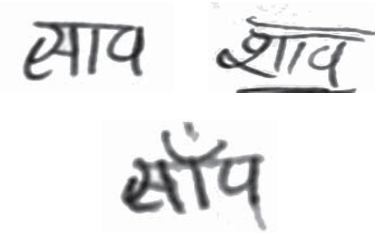

पन्ने पर 'साँप' को 'साप' लिखा है। उन्होंने बच्चे को बुलाकर कहा, "साँप लिखकर दिखाओ।" मैंने मैडम से अनुरोध किया कि हम थोड़ा बात कर लेते हैं फिर बच्चे को वापस बुलाते हैं। इसके बाद मैंने मैडम को कहानी में तीन जगह साँप लिखा हुआ दिखाया।

आकलन लेखन का या वर्तनी का?

आप देख सकते हैं कि बच्चे ने सही वर्तनी लिख ली है। ज़रा सोचें, क्या लेखन के आकलन में वर्तनी की गलतियाँ निकालना सबसे आसान काम नहीं होता है? यकीनन यह काम दसवीं, बारहवीं का कोई भी बच्चा आसानी-से कर सकता है, परिवार का कोई बड़ा सदस्य भी कर सकता है। फिर शिक्षक होने के नाते क्या आकलन यहीं तक सीमित होना चाहिए? जब मैं स्कूल में पढ़ती थी तब भी इसी पक्ष पर ज़ोर ज़्यादा होता था और आज भी यही जारी है। मन से लिखने के अवसर शायद ही कभी मिले हों, तो लेखन के भाव और वैचारिक पक्ष का आकलन होने का सवाल ही नहीं उठता।

गलतियों को लेकर यह सोच बहुत गहरी जड़ें जमा चुकी है कि यदि बच्चे को बताएँगे नहीं कि सही क्या है तो उन्हें कभी पता ही नहीं चलेगा, और वे हमेशा वही गलती दोहराते रहेंगे। यह बात कुछ सन्दर्भों में सही होने के साथ-साथ कितनी हास्यास्पद है, इसे समझने के लिए ज़रा इस बात को खुद पर लागू करके सोचें। क्या आप आज भी वही गलतियाँ करते हैं जो आप पहले कभी किया करते थे? क्या कोई गलती अवसर मिलने पर सुधारी? क्या कभी ऐसा हुआ कि अवसर मिलने से जो गलतियाँ सुधारीं, उसने सीखने के

प्रति हमारे रवैये को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया? सिर्फ गलतियाँ निकालने से हम सीखने के प्रति बच्चे के रवैये को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहे होते हैं।

आपने बच्चे की किताब में 'साँप' की तीन तरह की वर्तनी देखीं। बच्चा साँप की अलग-अलग वर्तनी शायद इसीलिए लिख रहा था क्योंकि साँप की जो वर्तनी उसने लिखी थी, वह उसकी विज़ुअल मेमोरी से मैच नहीं हो रही होगी। वरना वह कहानी में हर जगह 'साँप' की गलत वर्तनी 'साप' ही लिख रहा होता।

बच्चों द्वारा लिखित किताबें

बच्चों के लिए किताबें हमेशा वयस्क चुनते हैं। लेखन भी वयस्क ही करते हैं। बच्चों और बड़ों की दुनिया थोड़ी-बहुत अलग तो होती ही है। सोचती हूँ कि यदि बच्चे ही किताब लिखते और दूसरे बच्चे उन्हें पढ़ पाते तो शायद बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करना आसान होता। अमेरिका के इडाहो शहर में रहने वाले कक्षा-2 के एक बच्चे दिलोंन हेलबिग की किताब को पढ़ने के लिए लाइब्रेरी में लम्बी लाइन लगी थी। उसने अपने द्वारा लिखी 81 पन्नों की किताब को चुपचाप से लाइब्रेरी में रख दिया था। जब उसने यह बात अपने घर में बताई तो उसके माता-पिता ने वह किताब लाइब्रेरी से वापस माँगनी चाही। तब उन्हें लाइब्रेरी संचालक से पता चला कि दिलोंन की किताब *The adventures of Dillon Helberg* बच्चों को बहुत पसन्द आ रही है और उस किताब को *whoodini* अवॉर्ड से भी नवाज़ा गया है।

इसी तर्ज पर भोपाल में *मुस्कान* संस्था बच्चों के लिए, बच्चों द्वारा रचित कहानियाँ प्रकाशित कर रही है। *बस्ती में चोर, मिट्टी, पायल खो गई, the pardhi rule, going to school* आदि जिनमें बच्चों की अपनी दुनिया की झलकियाँ हैं। इस तरह की किताबें बच्चों में किताबों के प्रति झुकाव बनाने में काफी मददगार साबित हो सकती हैं।

मीनू पालीवाल: अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, सागर, म.प्र. में 2017 से 2022 तक काम किया। इससे पहले वे छह वर्ष तक आईसीआईसीआई बैंक में कार्यरत रहीं। मन में आने वाले सवालों के जवाब की तलाश में वे शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ीं। प्राथमिक कक्षा के बच्चों के साथ काम करने में विशेष रुचि। वर्तमान में *मुस्कान* संस्था, भोपाल में कार्यरत।

सभी फोटो: मीनू पालीवाल।